भारत-बाँग्लादेश संबंधों में बाधा : कट्टरपंथी समूह

बीज शब्द : भारत, बाँग्लादेश, भारत-बाँग्लादेश संबंध, सार्क देश, आतंकवाद, तालिबान।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रणेता तथा दक्षेस का सबसे बड़ा राष्ट्र भारत आज विश्व मंच पर एक अहम् स्थान बनाये हुये है। भारत को आज विकास का तीव्रगामी राष्ट्र माना जाता है और ऐसा भी माना जा रहा है कि भारत शीघ्र ही महाशक्तियों की जमात में शामिल हो सकेगा, किंतु महाशक्ति बनने का मार्ग इतना सहज नहीं है। इसके लिये तमाम तरह की बाधाओं को पार करना होता है और विभिन्न प्रकार के सहयोग की भी आवश्यकता होती है। इस कड़ी में सर्वप्रथम दृष्टि पड़ोसी राष्ट्रों की ओर ही उठती है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत एक परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र है और जियो और जीने दो तथा वसुधैव कुटुम्बकम के आदर्शों पर चलने वाला राष्ट्र है, किन्तु इन आदर्शों पर चलना तभी सम्भव हो सकता है जब पास-पड़ोस का रूख सहयोगात्मक व सकारात्मक हो।

पुरानी लोकोक्ति है कि यदि बाहर से सुरक्षा न मिल रही हो, तो अपने डर का दरवाजा बंद करके सुरक्षा की अनुभूति तो की ही जा सकती है। भारत और बाँग्लादेश के आपसी संबंधों के बारे में भी यह बिल्कुल सटीक है समझ में यह नहीं आता कि अपनी समस्याओं के लिये भारत बाँग्लादेश से क्यों गुहार लगाता है ?

भारत-बाँग्लादेश के मध्य बेहतर संबंधों की दोनों को ही जरूरत है, लेकिन इस बेहतरी की राह में सबसे बड़े रोड़े के रूप में कट्टरपंथियों की एक जमात उपस्थित है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिवेश में सातवें दशक की शुरूआत में दक्षिण एशिया में एक बड़ी घटना घटी और एक नये देश ने जन्म लिया था। उस समय शेख मुजीब की अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार थी- भारत बाँग्लादेश एक असीम भाईचारे में बंध गये हैं, उनका कृतज्ञ राष्ट्र भारत की सहायता भुला नहीं सकेगा। इस ऐतिहासिक घटना के अभी 50 वर्ष भी नहीं हुए हैं, लेकिन मुजीब की अभिव्यक्ति गुम हो गयी, आखिर क्यों? क्या हमारे भारत-बाँग्लादेश राजनीति शासन के तौर तरीकों में मतभिन्नता के कारण ऐसा हो रहा है या फिर कोई ऐसा कारण विद्यमान है, जिन्हें आसानी से पकड़ पाना संभव नहीं है।

डॉ. गीतांजलि चन्द्राकर
पोस्ट डाक्टरल फेलो (आई.सी.एस.एस.आर)
रक्षा अध्ययन विभाग,
भा. ना. स्नात. विज्ञान महाविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)।

मुजीब की हत्या के बाद से ही बाँग्लादेश की अधिकतर सरकारें मुजीब विरोधी गुट की रही, इसलिये उन्होंने मुजीब की नीतियों से उलट विदेश नीति अपनायी परिणामस्वरूप बाँग्लादेश का झुकाव पाक की ओर बढ़ा। अत: अनिवार्य रूप से उनका भारत विरोधी रूप सामने आया। संभव है कि जो अन्य कारण हैं, वे सहायक रूप में रहे हों। तब से लेकर आज तक बाँग्लादेश का भारत विरोध जारी है। इस बीच एक अनावश्यक और नकारात्मक विकास और भी हुआ, बाँग्लादेश का तालिबानीकरण। वास्तविकता तो यह है कि बाँग्लादेश आतंकवाद के नये उभरते हुए ढाँचे का प्रतिनिधित्व कर रहा है। इसका एक कारण यहाँ की गरीबी, बेरोजगारी की गहरी पैठ के साथ धार्मिक कट्टरपन को माना जा सकता है, लेकिन आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि बाँग्लादेश में मुख्यत: दो राजनीतिक दल है, जिनकी कमान शेख हसीना एवं बेगम खालिदा जिया के हाथ में है और दोनों ही अपने राजनीतिक लाभ के लिये देश को धार्मिक अतिवाद की ओर ले जा रही है।

एक बाँग्ला सामाचार-पत्र के संपादक इस संदर्भ में कहते हैं कि कुछ वर्ष पहले तक आम बाँग्लादेशी नागरिक स्वतंत्र ख्याल रखते थे, लेकिन आज वे शेख हसीना तथा खालिदा जिया समर्थकों और विरोधिओं में बँट गये हैं एवं कट्टरपंथ को बढ़ावा देने वाली इस स्थिति का पूरा लाभ उठा रहे है। राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के कारण वहाँ समाज विरोधी तत्वों का प्रभाव बढ़ रहा है। दोनों राजनीतिक दलों में कट्टरपंथी हावी होते जा रहे है, दोनों ही धार्मिक कट्टरपंथी जमात ए इस्लामी से संबंध बनाये हुए है। बाँग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी के साथ वह सरकार में है और अवामी लीग के साथ मिलकर वह सरकार के विरूद्ध राजनीतिक विरोध अब अपने निकृष्टतम स्तर तक पहुंच चुका है, जिसे नजर अंदाज करने का मतलब है कि आने वाले भविष्य में अपूरणीय क्षति को स्वीकार करना और यह केवल बाँग्लादेश के लिये ही नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया के लिये भी चिंता का प्रश्न होना चाहिए। दरअसल कट्टरपंथ बाँग्लादेश की राजनीति पर पूरी तरह हावी हो चुकी है। देशभर में कट्टरपंथी मौलानाओं का नेटवर्क फैल रहा है। नतीजतन आतंकवादियों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। उदारवादी, इतिहासकारों, प्रोफेसरों, कवियों, लेखकों, संपादकों आदि पर हमले किये जा रहे हैं। अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को सरकार नजरअंदाज कर रही है। इससे अधिक कट्टरता की निरंकुशता और क्या होगी

हरकत उल जेहादी (हूजी) 1992 से ही अलकायदा से

जुड़े है। इस समय उसके 150000 रंगरूट हैं जिन्होंने दो दर्जन से अधिक आतंकवादी अड्डे स्थापित कर रखे हैं। ये गतिविधियाँ संकेत देती है कि बांग्लादेश अब पाकिस्तान की राह पर चल पड़ा है। हाँलाकि पिछले कुछ समय से बाँग्लादेश की अर्थव्यवस्था सुधार के लक्षण दर्शा रही है, जबकि वह लंबे समय से गरीबी की मार झेलता रहा है और विकास की दौड़ में सबसे निचले पायदान पर रहा है। यदि कट्टरवाद जारी रहा तो यह स्थितियाँ और बदतर होगी कट्टरपंथी चाहते हैं कि गरीबी और भुखमरी की स्थिति बनी रहे, क्योंकि यह उनकी संजीवनी है। भारत को इस पर बड़ी सावींनी से नजर रखनी चाहिये। शोचनीय बात यह है कि प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में बाँग्लादेशी, वहाँ की भुखमरी, बेरोजगारी तथा बदहाल आर्थिक स्थिति के कारण अवैध रूप से भारत में प्रवेश करते हैं, लेकिन बांग्लादेश सरकार इसे दो टूक खारिज कर देती है। इसके साथ ही वहाँ से आतंकवाद का बहाव (प्रत्यक्ष या ब्रेन ड्रेन) भी भारत (खासकर पूर्वोत्तर राज्यों में) की ओर आता है, जो भारत के लिये चिंता का विषय है। इसलिये भारत सरकार की यह जिमेदारी बनती है कि वह पड़ोस में पनप रहे इस कट्टरपंथ को यथार्थ दृष्टि से परखे और इसे नियंत्रित करे। जब तक बाँग्लादेश कट्टरपंथियों के चंगुल से बाहर नहीं निकलेगा और 1971 जैसा नजरिया भारत के प्रति नहीं अपनायेगा, संबंधों का नया एवं बेहतर पुल बनाना संभव नहीं हो सकता।

बाड़बंदी का निर्णय और बाँग्लादेशी विरोधी-

घुसपैठ और आतंकी पोषण के मुद्दों पर भारत सरकार ने अपनी तरफ से भी कुछ एहतियाती कदम उठाने शुरू कर दिये हैं, जिनके तहत मिजोरम में बाँग्लादेश के साथ लगी अंतर्राष्ट्रीय सीमा की बाड़बंदी तुरंत शुरू करने का फैसला किया गया है और पूर्वोत्तर में भी बाँग्लादेश से घुसपैठ व तस्करी को रोकने के लिये बाड़बंदी अभियान शुरू किया जाएगा। मिजोरम में केन्द्रीय गृह मंत्रलय द्वारा नियुक्त विशेषज्ञों की एक टीम ने मिजोरम में 350 किमी. लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा का व्यापक सर्वेक्षण करके बताया कि 4095 किमी. लंबी बाँग्लादेश भारत सीमा का अधिकांश हिस्सा असुरक्षित है। मिजोरम सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि राज्य में तस्करों एवं घुसपैठियों की गतिविधियाँ बढ़ती जा रही हैं। उन्होनें कहा कि भारत विरोधीतत्व अलगाववादी संगठनों को हथियारों की खेप पहुंचाते रहे हैं। उन्होनें कहा कि सरकार को ऐसी सूचना मिली है कि तस्कर गिरोह मिजोरम का इस्तेमाल तस्करी के लिये कर रहे हैं। भारतीय खुफियां एजेंसियों को जानकारी मिली है कि पूर्वोत्तर के आतंकवादी संगठनों को, सतह से आकाश में मार करने वाली मिसाइलों सहित कई अत्याधुनिक हथियार और सामरिक उपकरण मिलते रहे हैं। मिजोरम के मुख्यमंत्री ने बताया कि मिजोरम में अंतर्राष्ट्रीय सीमा को जितना जल्दी बाड़ से घेर दिया जाये, भारत के हित में होगा। उन्होनें कहा कि सीमा की घेराबंदी नहीं होने से तस्करों, आतंकवादियों औक घुसपैठियों को लाभ पहुंच रहा है। उन्होनें कहा कि बाँग्लादेश व म्याँमार से हथियारों और नशीले पदार्थो की तस्करी जारी है। इसके लिये मिजोरम की भूमि का इस्तेमाल किया जा रहा है बाड़बंदी के इस निर्णय का रक्षाविदों ने दिल खोलकर स्वागत किया, किन्तु बाँग्लादेश की ओर से इस पर आपत्ति की जाती रही है। इसके दो कारण हो सकते हैं। एक तो यह है कि बरसों से अपनी सुविीं के लिए भारतीय सीमाव भूमि का उपयोग करने वाली बाँग्लादेशी अवाम इसे अपनी आजादी में खलल मानती है, तो दूसरा कारण भारत विरोधी कट्टर इस्लामवाद को अपनी गतिविधियों में अवरोध महसूस हो रहा होगा। बाँग्लादेश में कट्टर इस्लामवाद से वहाँ की सेना भी अछूती नहीं रही है।

वर्तमान स्थिति-

तमाम उथल-पुथल और विसंगतियों के बावजूद भी राजनैतिक स्तर पर दोनों ही स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं है कि दोनों देशों के आपसी संबंधों में कोई बदलाव आया है, जबकि द्विपक्षीय समस्याएँ जैसे सीमावर्ती गाँवों पर अधिकार का मसला, न्यूमूर द्वीप का मसला, गंगाजल के बंटवारे का मसला, अवैध रूप से भारत में घुस आये बाँग्लादेशी नागरिकों की वापसी का मसला, आतंक को पोषण एवं सहयोग का मसला आदि अपनी-अपनी जगह ज्यों के त्यों बरकरार है, फिर भी द्विपक्षीय वार्ताओं के दौर जारी है। वर्ष 2005 के दक्षेस शिखर सम्मेलन और दक्षेस विदेश मंत्रियों की बैठक के बाद से दक्षेस देशों ने आपसी विश्वास बहाली और उन्मुक्त व्यापारिक क्षेत्र की स्थापना पर जिस प्रकार से सहमति दिखायी है, वह काबिले तारीफ है, परन्तु जब भी भारत ने घुसपैठ और आतंकवाद जैसे मुद्दे पर बाँग्लादेश का ध्यान आकर्षित किया गया तो इसे उन्होंने महत्व नहीं दिया, बल्कि भारत पर ही पलटवार किया। हालाँकि सुनामी की मार झेल रहे बाँग्लादेश को भारत की मदद की दरकार है। घुसपैठ और आतंकवाद जैसे मुद्दों पर दोनों ही द्विपक्षीय वार्ता कराकर कोई न कोई रास्ता निकाल लेते तो इस बड़ी समस्या का हल निकल आता, परन्तु इन सबसे परे एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि बाँग्लादेश से संचालित भारत विरोधी गतिविधियों का सबसे बुरा असर भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों पर पड़ रहा है।

भारतीय प्रयास-

पुरानी लोकोक्ति है कि यदि बाहर से सुरक्षा न मिल रही हो, तो अपने घर का दरवाजा बंद करके सुरक्षा की अनुभूति तो की ही जा सकती है। भारत और बाँग्लादेश के आपसी संबंधों के बारे में भी यह बिल्कुल सटीक है समझ में यह नहीं आता कि अपनी समस्याओं के लिये भारत बाँग्लादेश से क्यों गुहार लगाता है? ऐसे ही गुहारों का परिणाम हैं कि बाँग्लादेश राइफल्स के जवान इतने

दुस्साहसी हो गये कि वे सीमा पर रेड अलर्ट जैसी घोषणाएँ करके अक्सर फायरिंग करते रहते हैं। कुछ वर्षो पूर्व कुछ भारतीय जवानों की आँखें निकलवाने जैसी घटना भी ऐसे ही दुस्साहस का उदाहरण है। इस कड़ी में भारत को चाहियें कि वह अपनी सुरक्षा संबंधी उपायों में और तेजी ले आये, साथ ही साथ निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान केन्द्रित करें-

1. बाँग्लादेश से लगी सीमाओं के बाड़बंदी के कार्य को जितना शीघ्र हो सके पूरा कर लेना चाहिए।
2. त्रिपुरा व मिजोरम क्षेत्र की सीमाओं पर जीरो लाइन पर बसे गाँवों के संबंध में तत्काल कोई समाधान ढूँढा जाना चाहिए, ताकि बाड़बंदी के कार्य में आ रही बाधाओं को दूर किया जा सके।
3. उस स्थान विशेष जहाँ से घुसपैठियों, आतंकवादियों, हथियारों, नशीले पदार्थो आदि का आवागमन होता हो, चिह्नित करके, वहाँ चौकसी बढ़ा देनी चाहिए।
4. सीमावर्ती क्षेत्रों पर स्थित मस्जिदों, मदरसों एवं पुनर्वास केन्द्रों पर भी विशेष निगरानी रखी जानी चाहिए।
5. सीमावर्ती क्षेत्रों की मौजूदा मतदाता सूची का वर्गीकरण 1970 तक तथा 1970 के बाद, दो रूपों मे करके 1970 के बाद वाले मतदाताओं की व्यापक छानबीन करके भी घुसपैठियों को चिह्नित किया जा सकता है तथा इसी आधार पर इन मतदाताओं को विशेष पहचान पत्र जारी करना चाहिए ताकि घुसपैठियों की पहचान आसानी से हो सके।
6. ऐसा माना जाता है कि बंगाल, त्रिपुरा, मिजोरम और आसाम में बाँग्लादेशी घुसपैठिये काफी तादाद में मजदूरों के रूप में तथा महिलायें वेश्यावृत्ति के धन्धों में कार्यरत है। ऐसे क्षेत्रों में सख्ती बरत कर घुसपैठियों को चिह्नित किया जा सकता है।
7. अतिरिक्त केन्द्रीय सुरक्षा बल की तैनाती से भी घुसपैठ पर रोकथाम के प्रयास सार्थक हो सकते हैं।

सीमा विवाद पर निर्णय-

अभी हाल ही में भारत और बाँग्लादेश के बीच समुद्री सीमा के विवाद पर हेग स्थित अंतर्राष्ट्रीय अदालत ने फैसला सुना दिया है उसने 25602 वर्ग किमी. विवादित क्षेत्र में से 19467 वर्ग किमी. क्षेत्र बाँग्लादेश का बताया है।

यह क्षेत्र बंगाल की खाड़ी में है और यह विवाद 40 साल पुराना है। भारत सरकार ने निर्णय का आदर करते हुए कहा है कि समुद्री सीमा के इस समाधान से दोनों देशों में परस्पर विश्वास और सद्भाव बढ़ेगा, क्योंकि इससे लंबे समय से चले आ रहे मुद्दे का हल हो गया है। इससे बंगाल की खाड़ी के इस इलाके में आर्थिक विकास तेज होगी बाँग्लादेश सरकार ने भी इस फैसले को दोनों देशों की जीत बताया है। अब दोनों देश पूरे आत्मविश्वास के साथ नये रिश्तों की शुरूआत कर सकेंगे।

संदर्भः-

1. सिंह मेजर जनरल सुखंवत, द लिबरेशन ऑफ बाँग्लादेश, नई-दिल्ली 1980, पृ.सं.-12।
2. चक्रवर्ती निखिल, भारत बाँग्लादेश संबंधों में सुधार, नई-दिल्ली 2005, पृ.सं.-28,32,34।
3. बाँग्लादेशी घुसपैठ एक गंभीर संकट भारतीय सुरक्षा के संदर्भ में, सिधादांत, सित.-दिस.2013 पृ.स.-20।
4. बदलते परिवेश में भारत-बाँग्लादेश संबंधा, सिधादांत, मार्च-जून 2014, पृ.स.-39।
5. बाँग्लादेश में उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता के परिदृश्य का भारत बाँग्लादेश संबंधों पर प्रभाव, प्रतियोगिता दपर्ण, मार्च 2014, पृ.स.-91।
6. अवैध बाँग्लादेशी क्या निकल पाएगें भारत से, दैनिक भास्कर, 9 मई 2014।
7. वर्तमान परिपेक्ष्य में भारत बाँग्लादेश संबंधी, रक्षा अनुसंधान,अंक-3, पृ. सं.-58, जन. 2012।
8. भारत की सुरक्षा के संदर्भ में बाँग्लादेश एक कारक, सुरक्षा परिदृश्य, अंक-5-6, पृ.सं.-85 अगस्त 2012।
9. भारत-बाँग्लादेश संबंधों ने ली करवट, दैनिक भास्कर, 30 जून 2014।
10. सीमा विवाद पर आया फैसला, दैनिक भास्कर, 15 अगस्त 2014।
11. www.educationforallindia.com
12. www.educationworldonline.net
13. www.indiaeducation.com
14. www.articlebase.com

◆◆◆

पृष्ठ 15 का शेष

16. महाभारत, भीष्मपर्व, नवम अध्याय ।
17. डॉ. राम विलास शर्मा, भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएं, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2002, पृ. 34 ।
18. राधाकुमुद मुखर्जी , भारत की आधारभूत एकता, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 81 ।
19. ऋग्वेद 10/128/9 अर्थवेद 6/98/1एवं 9/10/24 तैत्तिारीय संहिता 2/11,4,14,2 मैत्रेयी संहिता 6/2/3 काठक संहिता 8/17 तैत्तिारीय ब्राह्मण 3/1,2,9 शतपथ ब्राह्मण 5/4,2,2 निरुक्त 8/2 ।
20. तैत्तिरीय आरण्यक 1, 36, 6 ।
21. ऋग्वेद 3/55/7, 3/56/5, 4/21/9, 6/27/8, 8/19/32 आदि।
22. कौटिल्य अर्थशास्त्र पृ. 9-1, 17-18 ।
23. बी. चौधरी, द कैम्ब्रिज इकानामिक हिस्ट्री ऑफ इडिया, खण्ड - 2, ओरिएण्ट लांगमैन, 1982 पृ. 94 ।
24. रजनीपाम दत्त, इण्डिया टुडे, बम्बई, 1949, पृ. 103 ।
25. सुकुमार सेन, हिस्ट्री ऑफ बंगाली लिटरेचर, नई दिल्ली, 1960 पृ. 235-36 ।
26. डॉ. रामविलास शर्मा, स्वाधीनता संग्राम : बदलते परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली, 1992 पृ. 72 ।
27. सुकुमार सेन, हिस्ट्री ऑफ बंगाली लिटरेचर, नई दिल्ली, 1960, पृ. 236 ।
28. बंकिम समग्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1989, पृ. 744-46 ।
29. बंकिम समग्र, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1989, पृ. 745 ।
30. डॉ. रामविलास शर्मा, स्वाधीनता संग्राम : बदलते प्ररिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली, खण्ड पृ. 74 ।

◆◆◆